प्रचुरता

‘आनन्दमय जन्मदिवस’ के लिए
गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा चुना गया एक सद्गुण

सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक याऊ मिलर द्वारा लिखित व्याख्या

प्रचुरता का सद्गुण याद दिलाता है, पृथ्वी की प्रचुरता की—वर्षा और सूर्य के उपहार, हमारे ग्रह पर बहुसंख्य वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं के जीवन का उपहार और वे सभी अरबों नक्षत्र व आकाशगंगाएँ जो रात्रि में आकाश को प्रकाशित करती हैं।

ऋग्वेद के एक स्तोत्र ‘श्रीसूक्तम्’ में इस बृहत दिव्य शक्ति की स्तुति की गई है। इसके एक सूक्त में कहा गया है :

> चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्
> तां पद्मनेमीम शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥
>
> मैं ‘श्री’ की शरण लेता हूँ,
> जो जगत में प्रचुरता के रूप में प्रकट हैं।
> मैं उनकी शरण लेता हूँ जो कमल-पुष्पों से विभूषित हैं,
> वे जो चन्द्रमा की सुन्दर प्रभा के रूप में प्रकट हैं,
> वे जिनकी स्तुति सभी देवतागण करते हैं।
> हे ‘श्री’, दुर्भाग्य को दूर कर दीजिए![१]

‘श्री’ की अपनी आराधना में वैदिक ऋषियों ने विश्व में प्रचुरता के स्रोत को पहचाना और उसका सम्मान किया।

प्रचुरता के लिए अंग्रेज़ी शब्द ‘अबन्डन्स्’, लॅटिन भाषा के ‘ॲबन्डॅन्शिया’ से आता है, जिसका अर्थ है, परिपूर्णता और समृद्धि या विपुलता। संस्कृत में, प्रचुरता को ‘श्री’ शब्द से दर्शाया जाता है जो पवित्रता, सौन्दर्य, कृपा और मांगल्य का सूचक है। ‘श्री’ महालक्ष्मी का एक नाम भी है जो प्रचुरता की देवी हैं और उस दिव्य शक्ति का एक रूप हैं जो विश्व का सृजन करती है और उसमें व्याप्त है।

अपनी पुस्तक *Enthusiasm* [इन्थ्यूज़िऐज़म्] में श्रीगुरुमाई कहती हैं :

> जब तुम अपनी सम्पूर्ण सत्ता को उसके अपने सूक्ष्म स्पन्दन में स्थिर होने देते हो, तो तुम भगवान की शक्ति की अनुभूति कर सकते हो। यह 'श्री' है। यह परिपूर्ण है मांगल्य से, सौन्दर्य से, पवित्रता से, प्रचुरता से, गरिमा से, शालीनता से और सौभाग्य से। यह जान लो कि यह सब तुम्हारे अन्दर विद्यमान है।[२]

'श्री' से जुड़े हुए प्रचुरता के गुण हमारी अपनी सत्ता में विद्यमान हैं; सत्यतः, हम ब्रह्माण्ड की व्यापकता को अपने ही हृदय में अनुभव कर सकते हैं। जैसे-जैसे हम इस अनुभव की ओर बार-बार लौटकर अपने आपको याद दिलाते हैं कि 'श्री' हमारा अन्तर्जात स्वभाव ही, वैसे-वैसे हमारे जीवन में प्रचुरता का और भी अधिक स्थायी बोध विकसित होता जाता है।

प्रचुरता को विकसित करने का एक तरीक़ा जो मुझे विशेषरूप से प्रभावशाली लगता है वह है, अपने जीवन में मुझे जो आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं, उनकी अभिस्वीकृति करना, जैसे कि : जीवन को रूपान्तरित कर देने वाला उपहार—शक्तिपात दीक्षा, सिद्धयोग गुरुओं का मार्गदर्शन, मेरा परिवार और मित्रगण, अच्छा स्वास्थ्य और प्राकृतिक जगत का सौन्दर्य जो मुझे और हरेक को घेरे हुए है।

अपनी आध्यात्मिक आत्मकथा, 'चित्शक्ति विलास' में बाबा मुक्तानन्द दिव्य आत्मा की प्रचुरता का वर्णन करते हुए कहते हैं :

> क्या ग्रहण करने को दौड़ता है? संसार में तुझसे अन्य कुछ नहीं है। विश्वभर में तू ही व्याप्त है, तू ही सिद्ध, अक्षय तत्त्व है। तुझमें और जगत में भेद नहीं है। न कुछ द्वैत है। तू ही अद्वैत रूप से सब विश्व में भरा है। तू ही प्रशान्त, अव्यय, निर्मल, चित्प्रकाश कुण्डलिनी है।[३]

असंख्य रूपाकारों से सजे जगत की प्रचुरता चिति के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती है, जो प्रत्येक प्राणी के हृदय में विद्यमान है। विश्व की अपरिमित प्रचुरता को सच्चे अर्थ में ग्रहण करने के लिए हमें अन्तर में मुड़ना ही होगा।

> मैं 'श्री' की शरण लेता हूँ,
> जो जगत में प्रचुरता के रूप में प्रकट हैं।[४]

प्रचुरता के लिए अभिकथन

मैं 'श्री' की शरण लेता हूँ, जो जगत में प्रचुरता के रूप में प्रकट हैं।

[अभिकथन—वे कथन जिन्हें जागरूकता के साथ बार-बार दोहराया जाता है ताकि वे हमारी चेतना में पैठ जाएँ।]

---

[१] श्रीसूक्तम्, ५; कॉन्स्टन्टिना रोड्ज़ द्वारा लिखित *Invoking Lakshmi, The Goddess of Wealth in Song and Ceremony* [ऑल्बनी : स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, २०१०], पृ १२१-१२२।

[२] गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक, *Enthusiasm* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९७] पृ १२।

[३] स्वामी मुक्तानन्द, चित्शक्ति विलास [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१७] पृ २१३।

[४] श्रीसूक्तम्, ५; कॉन्स्टन्टिना रोड्ज़ द्वारा लिखित *Invoking Lakshmi, The Goddess of Wealth in Song and Ceremony* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY प्रेस, २०१०] पृ १२१।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।